Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

स्त्री अस्मिता के संदर्भ में 'अन्या से अनन्या' का मुल्यांकन

अर्चना महात्मा पाण्डेय
शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई।

प्रस्तावना–

सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखिका प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' सर्वप्रथम राजेन्द्र यादव द्वारा संपादित चर्चित पत्रिका 'हंस' में क्रमशः प्रकाशित हुई थी। पुस्तकाकार रूप में सन् 2007 में प्रकाशित होते ही वह पाठकों के बीच अति लोकप्रिय होते हुए चर्चा का प्रमुख विषय बन गई। प्रभा खेतान उपन्यास की तुलना में आत्मकथा की आयु अधिक मानती हैं। पाठक और लेखक के बीच एक साझेदारी होती है। वे कहती हैं कि ''दशकों बाद भी वह कहानी जिन्दा रहती है और रहेगी–हाँ, इसको पढ़ने का तरीका जरूर बदलता जायेगा। आज जिस रूप में इसे पढ़ा जा रहा है, संभव है उस रूप में यह काहनी भविष्य में न पढ़ी जाय, मगर आत्मकथा अपने पाठकों को बाध्य करती है कि वे खुद भी अपने आप से सवाल करें एवं वर्ग जाति एवं संस्कृति के प्रभाव को समझें।''[1]

कलकत्ता के व्यापारिक दृष्टि से संपन्न समझे जाने वाले खेतान परिवार में जन्म लेने वाली प्रभा खेतान ने अपने जीवन की बहुत बड़ी भूल यही की कि अपने से आयु में दुगुने, विवाहित और पाँच संतानों के पिता नेत्र विशेषज्ञ डॉ. सर्राफ के प्रेम में फँसकर डॉक्टर के पास आँख दिखाने गईं और उसे अपना तन–मन दोनों देकर चली आईं। डॉक्टर ने उन्हें बार–बार सावधान किया पर उनका मन है कि मानने को बिल्कुल तैयार नहीं। अन्ततः प्रभा जी को अपना गर्भपात करवाना पड़ा। यदि वे चाहतीं तो अपना रास्ता बदल भी सकती थीं। सब कुछ छोड़कर चाहती तो एक नई जिन्दगी की शुरूआत कर सकती

थीं पर उन्होंने स्वयं को उस प्रेम–प्रवाह में बहने दिया। डॉक्टर अपनी पत्नी को कभी भी नहीं छोड़ पाये, और प्रभा जी कभी भी डॉक्टर साहब की ब्याहता नहीं बन पाईं। दोनों ही पक्षों में साहस का अभाव था। आखिर वह कौन सा कारण है कि एक अच्छे खासे सम्पन्न घर की लड़की एक चालीस साल के खेले खाए व्यक्ति से प्रेम कर बैठी? इसका उत्तर आत्मकथा में बखूबी ढूँढा जा सकता है। प्रभा खेतान जी का उपेक्षित बचपन, उनका घोर एकाकी जीवन इन सब कारणों के मूल में हैं। वे अपनी आत्मकथा में अपने जीवन संघर्षों से जुड़े हुए महत्वपूर्ण पहलुओं का वर्णन करते हुए लिखती हैं। – ''नदी के द्वीप और किसे कहेंगे मेरा तो इहलोक– परलोक में कोई नहीं। हमेशा–हमेशा से अकेली हूँ। निःसंग रही हूँ। किसी को मुझसे प्यार नहीं, किसी की मुझ पर ममता नहीं, किसी ने क्षण–भर को भी नहीं सोचा कि मेरी यह अकेली जिन्दगी कैसे चलेगी? स्नेह, प्यार विहीन.... थार के रेगिस्तान जैसा मेरा जीवन रहा है, जहाँ केवल अकेले चलती रही हूँ।''[2] अपने बचपन को प्रभा जी अनाथ कहती हैं – ''अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घण्टों उनके दरवाजे पर खड़ी रहती। शायद अम्मा मुझे भीतर बुला लें। शायद'..... हाँ शायद अपनी रजाई में सुला लें। मगर नहीं एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा, हम दोनों के बीच। अम्मा मेरी बातों को समझ नहीं पातीं थीं।''[3]

प्रभा जी की देखभाल माँ के बदले दाई माँ किया करती थीं, अतः सब लोग उन्हें दाई माँ की बेटी कहते थे। बचपन की तमाम उपेक्षाओं और पक्षपात ने उन्हें घायल कर दिया था। प्रभा जी को चिड़ियों से संवाद या एकालाप करने की आदत थी। उनके पिता लादूराम खेतान को उनके करीबी दोस्तों ने उन्हें जहर देकर मार डाला था। उस समय प्रभा जी सिर्फ साढ़े नौ साल की थीं। पिता जी प्रभा को चाहते थे। पिताजी के अभाव की क्षतिपूर्ति डॉ. सर्राफ के रूप में हुई। प्रेम–रस के अभाव में जिसका जीवन बीता हो, वह स्त्री प्रेमी डॉ. के छलावे में आ जाये तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, धीरे–धीरे जब वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुईं तब भी डॉ. सर्राफ उनकी नकेल अपने ही हाथ में लिए रहते थे। फिर भी वे डॉक्टर से अलग नहीं हो पाईं। डॉ. साहब का शंकालु स्वभाव व नियंत्रण करने की प्रवृत्ति से त्रस्त प्रभा जी ने बेहतर भविष्य का सपना देखना बिल्कुल भी नहीं छोड़ा। उनकी यह दृढ मान्यता थी कि व्यक्ति अपने सपनों के सहारे बहुत कुछ पा सकता है। अपने सपनों के बारे में उसे साकार करने के बारे में वे अक्सर सोचती रहती थीं।

अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' को रोचक और पठनीय बनाने के लिए प्रभा जी ने उसे औपन्यासिक किस्सागोई का स्पर्श प्रदान किया है। वे सीधे अपने जन्म और बचपन से उसकी शुरूआत नहीं करती हैं। उसकी शुरूआत करती हैं अमेरिका के जैकसन हाइट से जहाँ वे डॉ. सर्राफ के तीव्र क्रोध का शिकार होकर मुसीबत में फँस जाती हैं। डॉ. साहब प्रभा जी को अपने साथ लेकर अपने हार्ट की जाँच करवाने के लिए अमेरिका आए हैं। डॉ. सर्राफ से निःस्वार्थ प्रेम करने के बावजूद उन्हें जगह–जगह पर अपमानित होना पड़ता है, उन्हें लोग बदनाम और बुरी औरत मानते हैं। उनका मारवाड़ी समाज उन्हें हिकारत की नज़र से देखता है। लेखिका ने इसके उदाहरण भी अपनी आत्मकथा में दिये हैं – ''इसकी देखा–देखी हमारी बहू–बेटियाँ बिगड़ेगी नहीं? और कल को वे भी किसी से उलझ जाएँ तो?'' ''इस औरत को हम मंच पर कैसे बैठाएँ? माना कि पढ़ी–लिखी आत्मनिर्भर स्त्री है पर ऐसी स्त्री समाज की नाक नहीं बन सकती।''[4]

डॉ. साहब के सानिध्य के लिए प्रभा जी ने तीन सौ रूपये महीने पर उन की सेक्रेटरी की नौकरी स्वीकार कर ली। उनकी यह निकटता डॉ. की पत्नी और उनके शुभ चिन्तकों को गँवारा नहीं था।

डॉ. साहब की ही सहायता से लायन्स क्लब के यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम के अन्तर्गत प्रभा जी को अमेरिका जाने का अवसर मिला। सन् 1966 में पहली विदेश यात्रा पर गईं। अमेरिका में सबसे पहले वे डॉ. तिवारी के यहाँ रहीं। उन्होंने बेवरली हिल में प्रैक्टिस करने वाले नेत्र विशेषज्ञ डॉ. ड्यूपांट के यहाँ पहुँचा दिया। मिसेज ड्यूपांट ने प्रभा को अपने यहाँ नौकरी दी।

अमेरिका से प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर कलकत्ता लौटने पर उन्होंने अपना स्वयं का हेल्थ क्लब फिगरेट खोला जिससे उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त हुई। अपने इस अमेरिका प्रवास के दौरान मिसेज ड्यूपांट, आइलिन, मरील जैसी नारियों के जीवन से अंतरंगता के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था के सिर–मौर माने जाने वाले अमेरिका में नारी की स्थिति का उन्होंने जायजा लिया। डॉ. ड्यूपांट नेत्र विशेषज्ञ के रूप में बहुत पैसा कमा रहे हैं, लेकिन वे पत्नी के अलावा प्रेमिका भी रखे हुए हैं। पत्नी उन्हें तलाक देने का साहस नहीं रखती, क्योंकि वह उन्हीं पर तो निर्भर हैं, उनके प्यार को वे खोना नहीं चाहती हैं। पति द्वारा परित्यक्त कर दी गई आइलिन अपने एकाकीपन को कुत्तों से भरती है। मरील की दो बेटियाँ हैं जो अपनी माँ से नफरत करती हैं। वे स्वयं को 'एक बीमार व्यवस्था की उपज' मानती हैं। आइलिन ब्लड कैंसर से पीड़ित हैं, एक दिन उनका निधन हो जाता है। उसका प्रिय कुत्ता पेपे अपनी नीली आँखों से आँसू बहाता रहता है। अपने अनुभव के आधार पर प्रभा खेतान इस निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि ये अमेरिकी औरतें भी हम भारतीयों की तरह ही असहाय हैं। केवल पैंट पहनने और श्रृंगार करने से कोई भी औरत सबल नहीं हो जाती। इस अमेरिका में भी अपने हक के लिए औरतों को लड़ना पड़ा है। आइलिन सुबह–शाम एक ही नसीहत देती है – ''एक अविवाहित लड़की को विवाहित पुरूष से दूर रहना चाहिए। उस पुरूष का कुछ नहीं बिगड़ेगा, लेकिन समाज तुम्हें दूसरी औरत के रूप में कटघरे में खड़ा कर चाबुक लगाएगा। सारी जिन्दगी तुम रोती रह जाओगी।''[5]

यह प्रभा खेतान जी का भोगा हुआ यथार्थ था, इसलिए वे आइलिन की बातों को समझकर भी नहीं समझना चाह रही थीं। इससे उन्हें पच्चीस से तीस हजार रूपये की मासिक आय होने लगी। फिगरेट के बाद भी प्रभा खेतान ने चमड़े से बनी वस्तुओं को निर्यात करने का व्यवसाय आरम्भ किया। हेल्थ क्लब शुरू करते समय भी समाज ने आलोचना की थी कि यह काम तो मैट्रिक पास करके भी किया जा सकता था। व्यापार की दुनिया की अपनी–अपनी अपेक्षाएँ थीं, जिस पर खरा उतर पाना एक नारी के लिए आसान काम नहीं था। सेन एण्ड कम्पनी के जनरल मैनेजर चंदन बासु के साथ काम शुरू किया तो घोर रूढ़िवादी की तरह, डॉ. सर्राफ उन्हें संदेह के घेरे में लेने लगे। किताबें और पत्र–पत्रिकाएँ पढ़कर प्रभा जी बहुत कुछ सीख रही थीं। धीरे–धीरे आत्मविश्वास में वृद्धि होती गई। नारी की स्थिति के बारे में इस आत्मकथा में जगह–जगह चिंता के कण दिखाई देते हैं। ''हमारी औरतें वह चाहे बाल कटी हों या गाँव–देहात से आई हों, कहीं भी सुरक्षित नहीं। उनके साथ कुछ भी घट सकता है। सुरक्षा का आश्वासन पितृसत्तात्मक मिथक है। स्त्री कभी सुरक्षित थी ही नहीं। पुरूष भी इस बात को जानता है। इसलिए सतीत्व का मिथक संवर्धित करता रहता है। सती–सावित्री रहने का निर्देशन स्त्री को दिया जाता है। पर कोई स्त्री सती रह नहीं पाती। हाँ सतीत्व का आवरण जरूर ओढ़ लेती है। या फिर आत्मरक्षा के नाम पर जौहर की ज्वाला में छलाँग लगा लेती हैं।''[6]

प्रभा खेतान जब जर्मनी के हॅमबर्ग नगर में हर्मन हैंसे से मिलने गईं तो उनकी रखैल मार्था से मुलाकात हो गई। हैंसे कहीं बाहर गये थे। उनकी पत्नी उनसे अलग रहतीं थीं। प्रभा जी ने कीमती शॉल का पैकेट मार्था को पकड़ा दिया। कुछ देर बातों के बाद मार्था की हरकत से लग गया कि वह 'लेस्बियन' हैं। वह कह रही थीं, प्लीज एक बार। नहीं मार्था बिल्कुल नहीं कहकर वे दरवाजा खोलकर बाहर निकल गईं। अपने इस व्यवहार पर वे टिप्पणी करते हुए कहती हैं – ''मैं उससे भयभीत क्यों हुई? मैने इतनी बेरूखी से उसका हाथ क्यों झकझोर दिया.... इतनी रूड होने की क्या जरूरत थी? पुरूष का प्रेम निवेदन अच्छा लगता है, स्त्री का नहीं, विचित्र है संस्कारों का ताना–बाना।''[7]

प्रभा खेतान ने गरीब मुसलमानों की समस्या प्रधान तालतल्ला गली का भी यथार्थ खाका अपनी आत्मकथा में खींचा है। जहाँ उनकी फैक्ट्री है। इसी गली मे नफीसा तपेदिक से दवा–दारू के अभाव में मर गई, क्योंकि रियाद से शौहर द्वारा भेजे गए पैसे उसका भाई आलमगीर जुए और दारू में झोंक आता था। प्रभा खेतान को अपनी फैक्ट्री ईमानदार, मेहनती कर्मचारी इस्माइल मास्टर और जतिन अमेरिका में भी याद आते हैं। प्रभा जी ने अपने समय की हलचलों से स्वयं को अलग नहीं किया है। कलकत्ता के छात्र जीवन की हलचलों, नक्सलवाद की बाढ़ और अंततः वामपंथ की सरकार का पदारूढ़ होना सारे प्रवाह और घटनाचक्र आत्मकथा के कई हिस्से में समाहित हैं। बंगाली–मारवाड़ी संबंधों पर भी रोशनी डाली गई है। बंगाली लोग मारवाड़ियों को शोषक मानते थे। इस बात को प्रभा जी सिरे से नकार देती हैं, क्योकि उन्होंने पिता और भाइयों को रात–दिन मेहनत करते देखा था।

अपनी अनुभवहीनता एवं यौनावस्था के उद्दाम वेग के चलते प्रभा जी डॉ. सर्राफ के प्रेम जाल में फँस तो गई, लेकिन बाद में उनका मन इस संबंध को लेकर गणित लगाया करता। उनके अंदर प्रश्न खड़े होते और वे प्रायः उसका उत्तर तलाशती रहतीं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता प्रभा खेतान के जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। निर्यात व्यापार की आर्थिक सफलता ने उनके व्यक्तित्व को ऊँचाई प्रदान की।

डॉ. सर्राफ के परिवार में प्रभा खेतान सिर्फ और सिर्फ अन्या थीं लेकिन मजबूत आर्थिक आधार ने उन्हें अनन्या बना दिया। जो मारवाड़ी समाज उन्हें मंचासीन नहीं देखना चाहता था, उसी ने उन्हें कलकत्ता चेम्बर ऑफ कॉमर्स की प्रथम महिला अध्यक्ष का पद प्रदान किया।

प्रभा खेतान जी की यह आत्मकथा सन् 1966 से लेकर सन् 1990 तक के कालखण्ड में मारवाड़ी समाज में उठने वाले आलोड़न–विलोड़न पर भी सूक्ष्मता के साथ दृष्टिपात करती हैं। सामाजिक सुधारों के कर्णधार स्त्री की एक आदर्शवादी छवि लेकर चल रहे थे। स्त्री की अलग पहचान उन्हें आतंकित करती थी। लकीर से हटकर चलने वाले उनकी दृष्टि में अपराधी थे। प्रभा जी के अनुसार ये कर्णधार एक आम–मारवाड़ी की प्रगतिशीलता में बाधक थे। किसी ने बंगाली लड़की से शादी कर ली और वह मुख्यधारा से ही कट गया। शिक्षा को हर बुराई की जड़ माना जाता था। व्यापारिक घरानों के लड़के उच्च शिक्षा नहीं लेते थे। मारवाड़ी समाज का उच्च वर्ग सुधारवादी संस्थाएँ स्थापित कर रहा था, जिनसे आम मारवाड़ी अप्रभावित रहा। मारवाड़ी समाज में नारी का चित्र अपूर्ण और खण्डित दिखाई देता है। ''अजीब समाज है, यहाँ सिर्फ कुँवारी कन्याओं और पत्नियों की जरूरत है। बाकी कौन बचीं? विधवाएँ और वृद्धाएँ तो तीरथ में रहती हैं, या बड़े दिन की छुट्टियों में जब कलकत्ता क्रिकेट और पिकनिक से गुलजार रहता है तो ये औरतें मुरारी बापू एवं आशाराम बापू का प्रवचन सुनने जाती हैं।''[8]

महात्मा गाँधी की तरह अपनी कमजोरी को भी लेखिका ने स्वीकार किया है। वे डॉ. सर्राफ को छोड़ना चाहती थी, परन्तु निर्णय की तमाम स्वतंत्रता के बावजूद डॉ. साहब को दोड़ने के नाम से मैं कातर हो जाती थी। डॉ. साहब की दृष्टि में परिवर्तन दिखाई पड़ा। वे किसी अन्य स्त्री में रमने लगे। श्रीमती सर्राफ ने ही इस बात की पुष्टि की और प्रभा खेतान बदले की आग में धधकने लगीं। उन्होंने भी अन्य रिश्ता कायम करने का संकल्प किया। एक परिचित पुरूष को नजदीक आने का अवसर दिया। जिस स्थिति में प्रभा जी ने स्वयं को डाल दिया था, उस पर वे निरंतर विचार–मंथन करती रहती थीं। जन्मगत संस्कार तो उनसे लिपटे हुए थे, नारी सशक्तीकरण के सारे दावे उन्हें झूठे लग रहे थे – ''मुझे लगता क्या घर, पति और एक बच्चे के बिना मैं अधूरी हूँ? या फिर मेरे दामन का दाग दूसरों की नज़र में मेरी प्रत्येक उपलब्धि को तुच्छ ठहराएगा। सम्पर्क में आने वाले लोग भी चाहे अनचाहे मेरी इसी कमी की ओर इशारा करते। मेरी गृहस्थी नहीं थी पर किसी और की गृहस्थी को उसके सारे बोझ और कर्मकाण्डों को मैं कितनी वफादारी से ढो रही थी, चाह कर भी जिससे मैं निकल नहीं पा रही थी, या फिर भ्रम पाल रही थी कि यह गृहस्थी मेरी भी है।''[9]

डॉ. सर्राफ से प्रेम के कारण ही प्रभा खेतान ने आरोपों और उपेक्षाओं की वर्षा बराबर सही। उनकी घर गृहस्थी की मदद करने में उन्होंने तनिक भी संकोच नही किया। इस निष्ठा और प्रामाणिकता का क्या प्रतिफल मिला? डॉक्टर के निधन पर जो शोक सभा हुई उसमें अनेक वक्ताओं ने मृतक के

गुणों का बखान किया पर प्रभा खेतान नाम की स्त्री का उल्लेख किसी ने भी करना उचित नहीं समझा। डॉक्टर के परिवार के किसी सदस्य ने भी इस संबंध में मुँह खोलने की आवश्यकता नहीं महसूस की। आत्मकथा का अंत एक दुखांत के रूप में होता है। स्त्री को लेकर समाज की निष्ठुरता और क्रूरता का प्रदर्शन इससे अधिक अच्छे रूप में अन्यत्र नहीं मिलेगा। अपनी इस आत्मकथा में प्रभा जी ने अपने कवि रूप का भी थोड़ा बहुत उल्लेख किया हैं, किन्तु उपन्यास लेखिका के रूप में अपनी रचनात्मक गतिविधियों का कहीं भी वर्णन नहीं किया है। उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि इससे पाठकों की अपेक्षाएँ भंग होती हैं। 'अन्या से अनन्या' लेखिका की नियति का इतिवृत्त तो है ही साथ ही यह भारतीय नारी की दशा और दिशा का आईना भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 256
2.वही, प्रभा खेतान, पृ. 256
3.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 264–331
4.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 189
5.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 142
6.वही, प्रभा खेतान, पृ. 208
7.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 218
8.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 250
9.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, पृ. 261

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org